The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 12 | December 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

पारिवारिक सामाजिक आर्थिक स्थिति का बाल पोषण पर प्रभाव: रांची के करमटोली क्षेत्र का एक मानव शास्त्रीय अध्ययन

सच्चिदानन्द बड़ाईक

पी एच डी शोधार्थी ,डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय रांची ,ईमेल आईडी:baraik.sachin68@gmail.com

शशि किरण

असिस्टेंट प्रोफेसर ,डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय रांची ,ईमेल आईडी: kiranshashi.rcr@gmail.com

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.18266145

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 29-12-2025

Published: 10-01-2026

Keywords:

बाल पोषण, कुपोषण, वृद्धि अवरोध, दुबलापन

ABSTRACT

इस शोध पत्र के अंतर्गत बच्चों के पारिवारिक सामाजिक आर्थिक स्थिति एवं बाल पोषण के बीच उसके अंतर्संबंध को दर्शाया गया है। बच्चों में उनकी पोषण की स्थिति न केवल जैविक स्थिति को बतलाता है, अपितु यह सामाजिक आर्थिक स्थिति, संसाधन तक पहुंच एवं राज्य की कल्याणकारी व्यवस्था को भी बतलाता है। इस सामाजिक आर्थिक स्थिति के अंतर्गत परिवार की आय, उनकी शिक्षा, आवासीय स्थिति, एवं भूमि एवं संसाधन की उपलब्धता शामिल है। इस शोध का उद्देश्य केवल यह दिखाना नहीं है, की बच्चों में कुपोषण की स्थिति केवल गरीबी के कारण होता है वरन इसके साथ सामाजिक सांस्कृतिक मान्यताएं, संसाधन वितरण जैसे कारक भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

परिचय

वर्तमान समय में भारत जैसे विकासशील देश में कुपोषण एक गंभीर समस्या है, जिससे उनका मानसिक एवं शारीरिक विकास नहीं हो पाता है। यहां पर एक बड़ी संख्या गरीबी स्तर के नीचे जीवन जीती है, जिससे वे अपने बच्चों का पालन पोषण सही तरह से नहीं कर पाते हैं। इसी कारण जब अभावग्रस्त परिवार में बच्चों का जन्म होता है, तो उन्हें पर्याप्त मात्रा में पोषक पदार्थ नहीं मिल पाता है,जिस कारण वे कुपोषण के शिकार हो जाते हैं।

WHO के अनुसार कुपोषण किसी व्यक्ति के पोषक तत्वों के सेवन में कमी, अधिकता या असंतुलन से है। इसके दो प्रकार हैं।

(i) अतिपोषण – यह पोषक तत्वों की अत्यधिक खपत को दर्शाता है, जिसमें अधिक वजन, मोटापा, एवं आहार से संबंधित रोग शामिल है।

(ii) अल्प पोषण – अल्पोषण अक्सर कुपोषण के साथ एक दूसरे के स्थान पर प्रयोग किया जाता है, जो आहार के अपर्याप्त सेवन के परिणाम स्वरूप होता है, जिसमें वृद्धि अवरोध, वजन की कमी, एवं दुबलापन शामिल है।

NFHS 5 के अनुसार भारत में अभी कम वजन, बौनापन, दुर्बलता का प्रतिशत क्रमशः 19.3, 35.5, 32.1 है।

वहीं झारखंड में देखे तो इनका प्रतिशत 22.4, 39.6, 39.4 है।

झारखंड एक ऐसा राज्य है, जहां आबादी का एक बड़ा हिस्सा निम्न आय वर्ग से संबंधित है। सामाजिक आर्थिक स्थिति एक बहुआयामी संरचना है, जिसमें सामान्यतः आय, व्यवसाय, शिक्षा, एवं आवासीय स्थिति जैसे तत्व शामिल होते हैं। यह परिवार में भोजन की उपलब्धता, स्वास्थ्य सेवाओं में पहुंच, स्वच्छता, महिला सशक्तिकरण, देखभाल व्यवहार और संज्ञानात्मक विकास को प्रभावित करती है।

मानवशास्त्रीय दृष्टिकोण से सामाजिक आर्थिक स्थिति केवल आर्थिक श्रेणी को नहीं बतलाता है, अपितु यह सामाजिक स्थिति, सांस्कृतिक व्यवहार एवं सामुदायिक संरचनाओं का समावेश है, जो बच्चों के पोषण को प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से प्रभावित करती है।

बाल पोषण पर माता की सामाजिक स्थिति निर्णय क्षमता और कार्य भार का प्रभाव

बच्चों में उनके स्वास्थ्य और पोषण के निर्धारण में माता की अहम भूमिका होती है। परिवार में माता की स्थिति, निर्णय लेने की क्षमता, रोजमर्रा के काम काज का सीधा असर बच्चों के पोषण पर पड़ता है। शिक्षित और जागरूक माताएं स्वास्थ्य एवं पोषण से जुड़े मामलों में सही निर्णय ले पाती हैं जैसे बच्चों के लिए बेहतर भोजन, साफ सफाई, समय पर टीकाकरण जैसी चीजों पर अधिक ध्यान देती हैं। अनेकों ऐसे अध्ययन से यह प्रमाणित हुआ है कि परिवार में माता के निर्णय लेने की क्षमता का भी असर बच्चों के पोषण पर पड़ता है। जिन परिवारों में माताएं बच्चों के स्वास्थ्य संबंधी मामलों में स्वयं निर्णय लेती हैं, वहां बच्चों में कम कुपोषण, बेहतर वजन और अच्छी प्रतिरोधक क्षमता देखने को मिलती है।

ग्रामीण और शहरी क्षेत्र में महिलाएं घर के साथ साथ अपनी आजीविका के लिए बाहर भी काम करती हैं। कई बार यह देखा गया है, व्यस्तता या काम का भार ज्यादा होने पर यह बच्चों के पोषण को भी प्रभावित करती है, जिससे बच्चों को समय पर भोजन न मिलना एवं साफ सफाई जैसे स्वास्थ्य संबंधित मामलों में ध्यान कम हो जाता है।

स्वास्थ्य कल्याणकारी योजनाएं और बाल पोषण की वास्तविकता

भारत एक विशाल जनसंख्या वाला देश है, जहां बच्चों का पोषण न केवल स्वास्थ्य का विषय है, बल्कि यह राष्ट्र के भविष्य को भी बतलाता है। पिछले कई दशकों से केंद्र और राज्य सरकार के द्वारा मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए कई योजनाएं शुरू की गई हैं, जैसे आंगनवाड़ी योजना, मिड डे मिल स्कीम, राष्ट्रीय पोषण अभियान, जननी सुरक्षा योजना आदि। इन योजनाओं का प्रमुख उद्देश्य बच्चों के पोषण को बेहतर बनाना एवं गर्भवती महिलाओं को पोषण एवं स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करना है, जिससे कुपोषण की समस्या कम किया जा सके। इन योजनाओं की इतनी लंबी सूची होने के बावजूद होने के बाद भी बच्चों में कुपोषण एक गंभीर समस्या बनी हुई है। NFHS 5 के आंकड़ों को अगर देखे तो बच्चों में कुपोषण की समस्या अभी भी बहुत चिंताजनक है।

पहला कारण सामाजिक आर्थिक असमानता है, यहां पर एक बड़ा वर्ग गरीबी रेखा के नीचे या उसके आसपास जीवन व्यतीत करती है। ऐसे परिवारों में भोजन की गुणवत्ता और मात्रा दोनों प्रभावित होती है। माता पिता अपने बच्चों को भरपेट भोजन तो देते हैं, परन्तु भोजन की पोषकता और संतुलन पर ध्यान देना संभव नहीं हो पाता है। वे अपने बच्चों को कार्बोहाइड्रेट युक्त भोजन तो देते हैं पर प्रोटीन, आयरन एवं विटामिन जैसे आवश्यक तत्वों को नहीं दे पाते हैं। योजनाएं कुछ हद तक सहायता तो करती हैं, परन्तु गरीबी की गहराई इतनी व्यापक है कि सरकारी सहायता पूरी तरह से इसकी भरपाई नहीं कर पाती है।

दूसरा कारण मातृ शिक्षा और पोषण ज्ञान का अभाव है। अनेक ग्रामीण समुदायों में माताओं को पोषण, स्तनपान, साफ सफाई और शिशु देखभाल संबंधित जानकारी नहीं मिल पाती है। इस प्रकार के व्यवहार बच्चों के पोषण पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं।

तीसरा, इन योजनाओं का कमजोर क्रियान्वयन है। कई आंगनवाड़ी केंद्रों में संसाधन की कमी, समय पर सामग्री का न पहुंचना, कार्यकर्ता पर अत्यधिक बोझ और निगरानी व्यवस्था का कमजोर होना है। कहीं भोजन की गुणवत्ता खराब होती है, कहीं वितरण में अनियमितता दिखती है। इसी कारण योजनाओं का लाभ हर बच्चे तक समान रूप से नहीं पहुंच पाता है।

इसके अलावा बदलती खान पान की आदतें भी कुपोषण का एक उभरता हुआ कारण है। शहरी क्षेत्रों में फास्ट और जंक फूड बच्चों के भोजन का हिस्सा बनते जा रहे हैं। अब ग्रामीण क्षेत्र में भी परंपरागत और पौष्टिक पदार्थ का सेवन धीरे धीरे कम होता जा रहा है, जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव बच्चों के पोषण पर पड़ रहा है।

शोध का उद्देश्य

(i) रांची के करमटोली के क्षेत्र में बच्चों के पोषण की स्थिति का आकलन करना

(ii) करमटोली क्षेत्र में बच्चों के परिवार के सामाजिक आर्थिक स्थिति का विश्लेषण करना।

शोध विधि

इस शोध के लिए 50 बच्चों का चयन रैंडम सैंपलिंग मैथड विधि के तहत किया गया है जिनकी उम्र 5 से 13 वर्ष के बीच थी।

सामाजिक आर्थिक स्थिति से संबंधित जानकारी के लिए अनुसूची का प्रयोग किया गया है। इसके साथ साक्षात्कार एवं असहभगी अवलोकन विधि का भी प्रयोग किया गया है।

इसके अलावा मानवमितीय माप का भी प्रयोग किया गया है, जिससे उनकी लंबाई एवं वजन की जानकारी प्राप्त हो सके।

पूर्व अध्ययनों की समीक्षा

1. सरकार एस) 2016(, International Journal of population studies,2(1), 89-102.
   इसमें उन्होंने पश्चिम बंगाल के 5 वर्ष से कम उम्र के बच्चों में बाल कुपोषण और संबंधित कारकों के बारे में बतलाया है।
2. हांडा एस) 1999(, Development and cultural change.47(2), 421-439.
   इसमें उन्होंने बच्चे का कद उसके माता के शिक्षा से किस तरह प्रभावित होती है, इसे बतलाया है।
3. विश्वास एस, बॉस के और कोजियल एस) 2011(, Journal of Human science 8(1), 289-300
   इसमें उन्होंने पूर्वी भारत के ग्रामीण बंगाली पूर्वी स्कूली बच्चों में पोषण की स्थिति पर सामाजिक कारकों के प्रभाव के बारे में वर्णन प्रस्तुत किया है।
4. देसाई एस और अल्वा एस) 1998(. Demography,35(1).71
   इसमें उन्होंने बाल स्वास्थ्य एवं माता की शिक्षा के बीच संबंध स्थापित करने का प्रयास किया है।
5. स्टेमिन कोविक जेड, डिजी कानोविक बी, लासेर ओ और बीजेगोविक मिल्कानोविक वी) 2016(, Public health nutrition, 19(15), 2734-2742

जिसमें उन्होंने सर्बिया के अध्ययन के अंतर्गत यह बतलाया कि बच्चों की स्वास्थ्य एवं पोषण की स्थिति उनकी माता की शिक्षा से अत्यधिक प्रभावित होती है।

6. सुनील टी) 2009(, Maternal and child Nutrition,5, 251-259.
   इसके अंतर्गत उन्होंने यमन में बचपन के कुपोषण पर सामाजिक, आर्थिक और व्याहारिक कारकों के प्रभाव के बारे में बताया है।
7. राय । और चंद्र ए) 2019(, International Journal of Scientific and Research Publications,3(5), 1-8
   इसमें उन्होंने त्रिपुरा में बच्चों का मानवमितीय संकेतकों का अध्ययन किया है।
8. अरोड़ा डी, दत्ता एस और सॉस) 2014(, International Journal of occupational safety and health,4(2),15-18
   इसमें उन्होंने पश्चिम बंगाल के पुरुलिया जिले में प्राथमिक विद्यालय में पोषण की स्थिति पर सामाजिक आर्थिक कारकों का वर्णन किया है।

अध्ययन क्षेत्र

इस शोध के लिए अध्ययन क्षेत्र रांची के करमटोली का चयन किया गया, जो एक शहरी जनजातीय बहुल क्षेत्र है। यहां उरांव एवं मुंडा जनजाति की संख्या अधिकतम है और इनके साथ यहां मिश्रित जाति के लोग भी निवास करते हैं।

अध्ययन की इकाई

इस अध्ययन के लिए कुल 50 बच्चों का चयन किया है जिनकी उम्र 5- 12 वर्ष के बीच है।

परिणाम एवं चर्चा

बाल पोषण बच्चों के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास का महत्वपूर्ण संकेतक है। इसके स्तर पर असर डालने वाले प्रमुख कारक सामाजिक-आर्थिक स्थिति, माता-पिता की शिक्षा, पेशा और आवासीय स्थिति हैं। यह अध्ययन झारखंड के करमटोली क्षेत्र में 50 बच्चों के पोषण स्तर और उनके पारिवारिक सामाजिक-आर्थिक कारकों के बीच संबंध का मूल्यांकन करने के लिए किया गया है।

1. Body Mass Index (BMI)
   अध्ययन में पाया गया कि कुल 50 बच्चों में से 20 बच्चों) 40 %का BMI 14 से कम था। यह परिणाम स्पष्ट रूप से यह दर्शाता है कि लगभग आधे बच्चे पोषण की कमी से प्रभावित हैं। BMI 14 से कम होना underweight स्थिति का संकेत है ,जो बच्चों में अल्प और दीर्घकालिक पोषण संबंधी कमियों को उजागर करता है।

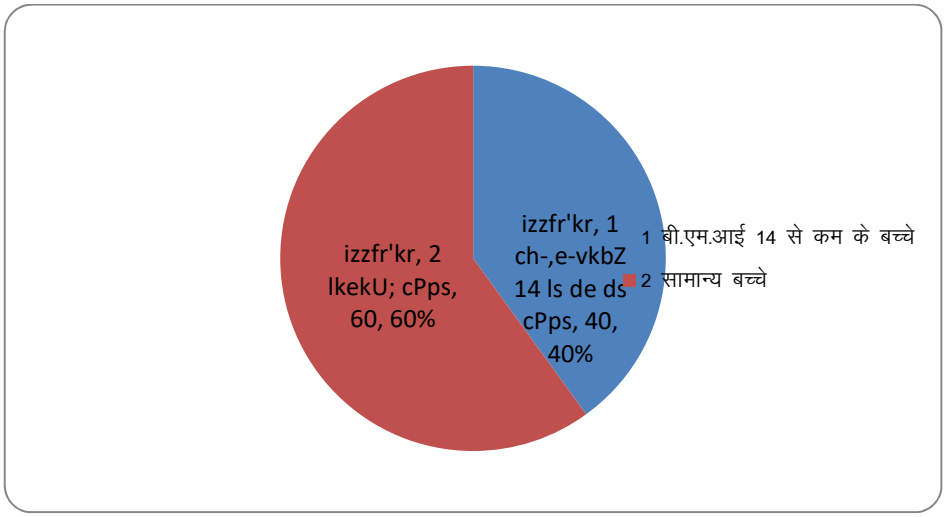

2. Stunting (ऊँचाई के हिसाब से वृद्धि में कमी(7बच्चों) 14 (%में stunting देखा गया।यह परिणाम यह संकेत देता है कि कुछ बच्चों में दीर्घकालिक पोषण की कमी उनके शारीरिक विकास पर असर डाल रही है।

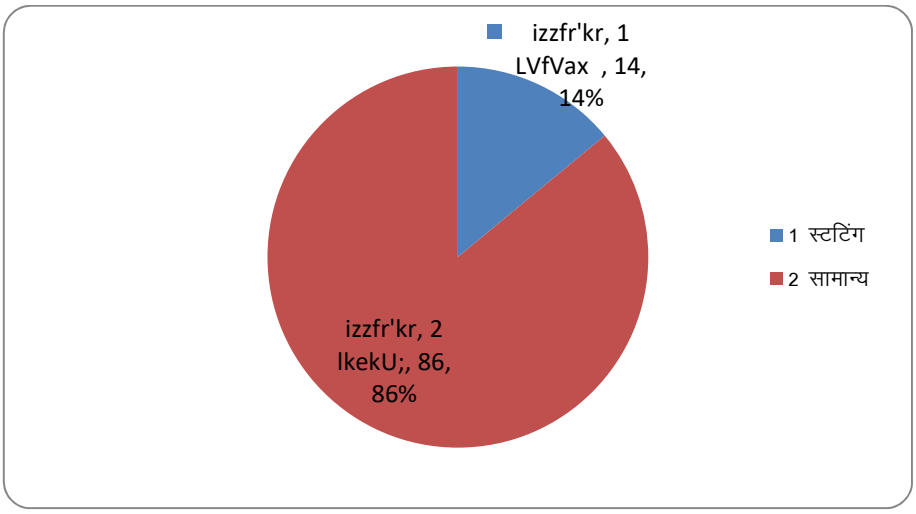

3. Wasting (वज़न के हिसाब से कमजोरी(
20बच्चों) 40 (%में wasting की स्थिति पाई गई। यह उच्च प्रतिशत बच्चों में अल्पकालिक पोषण की कमी और स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को दर्शाता है।
4. माता-पिता की शिक्षा अध्ययन में70 % बच्चों के माता-पिता कम पढ़े-लिखे ,जबकि केवल30 % माता-पिता शिक्षित पाए गए।कम शिक्षा का स्तर पोषण संबंधी जानकारी और बच्चों के स्वास्थ्य प्रबंधन में कमी का संकेत देता है।

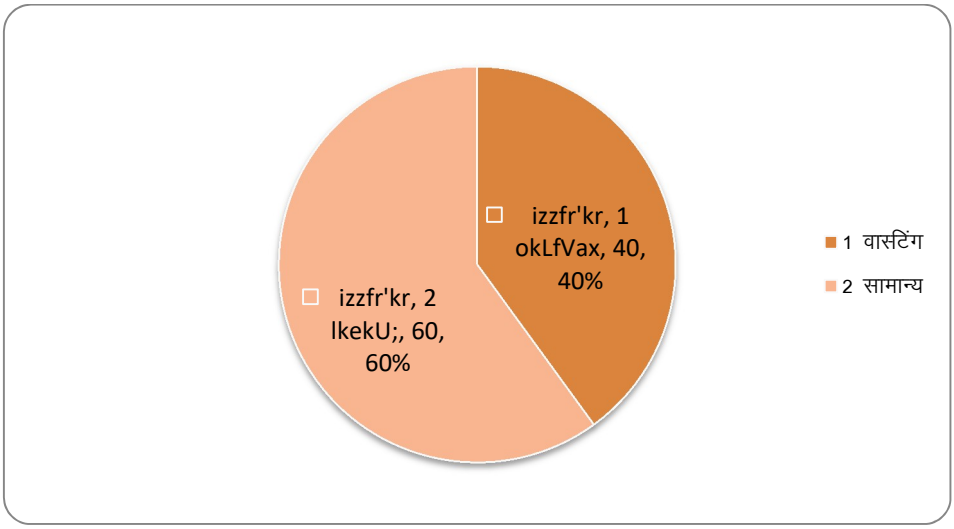

5. माता-पिता का व्यवसाय

   अधिकांश माता-पिता) 65 (%सामान्य पेशेवर कार्य करते हैं ,जैसे मजदूरी ,प्लंबर ,इलेक्ट्रिशियन ,दुकानदार आदि। यह परिणाम परिवार की आर्थिक स्थिति और पोषण क्षमता को सीमित दर्शाता है।

6. परिवार की आवासीय स्थिति

   62% परिवारों की आवासीय स्थिति सामान्य पाई गई। आवासीय स्थिति बच्चों के स्वास्थ्य और पोषण पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालती है ,क्योंकि पर्याप्त आवास और स्वच्छ वातावरण पोषण और रोग-प्रतिरोधक क्षमता में सहायक होता है।

निष्कर्ष

इस अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि झारखंड के 50 बच्चों के पोषण स्तर पर सामाजिक-आर्थिक कारकों का महत्वपूर्ण प्रभाव है। विश्लेषण से यह निष्कर्ष सामने आया कि BMI, Stunting और Wasting: लगभग 40% बच्चों का BMI 14 से कम था, 13% बच्चों में stunting और 40% बच्चों में wasting पाई गई। यह बाल पोषण की गंभीर कमी और अल्प तथा दीर्घकालिक पोषण असंतुलन को दर्शाता है।

माता-पिता की शिक्षा: 70% बच्चों के माता-पिता कम पढ़े-लिखे पाए गए। यह परिणाम शिक्षा और पोषण जागरूकता के बीच स्पष्ट संबंध को उजागर करता है। शिक्षित माता-पिता के बच्चों में पोषण की स्थिति अपेक्षाकृत बेहतर रही।

माता-पिता का व्यवसाय एवं आर्थिक स्थिति: 65% माता-पिता सामान्य रोजगार जैसे मजदूरी, प्लंबर, इलेक्ट्रिशियन, दुकानदार आदि करते हैं, जो परिवार की सीमित आर्थिक क्षमता और बच्चों के पोषण स्तर पर प्रभाव डालती है।

परिवार की आवासीय स्थिति: 62% परिवारों की सामान्य आवासीय स्थिति बच्चों के स्वास्थ्य और पोषण के लिए अनुकूल पाई गई। आवास और पर्यावरणीय परिस्थितियाँ बच्चों के शारीरिक विकास और रोग प्रतिरोधक क्षमता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

संदर्भ सूची

- The State Of the World's Children 2019 Report
- UNICEF/WHO/World Bank Group–Joint Child Malnutrition Estimates 2020 Edition.
- The State of Food Security & Nutrition in the World,2020 Report.
- Government of India. (2021). National Family Health Survey (NFHS-5) 2019–21: India Report. Ministry of Health and Family Welfare.
- UNICEF. (2020). The State of the World's Children 2020: Children, Food and Nutrition. United Nations Children's Fund.
- WHO. (2020). Malnutrition: Key Facts. World Health Organization.
- Black, R. E., Victora, C. G., Walker, S. P., & et al. (2013). Maternal and child undernutrition and overweight in low-income and middle-income countries. The Lancet, 382(9890), 427–451.
- Bhargava, A. (2016). Socio-economic influences on child nutrition: An econometric analysis. The Journal of Development Studies, 52(6), 865–880.
- Spears, D. (2013). How much international variation in child height can sanitation explain? World Bank Policy Research Working Paper, 6351.
- Subramanian, S. V., Ackerson, L. K., Smith, G. D., & John, N. A. (2009). Association of maternal height with child mortality, anthropometric failure, and anemia in India. JAMA, 301(16), 1691–1701.
- Headey, D., Hoddinott, J., & Park, S. (2016). Drivers of nutritional change in four South Asian countries: A dynamic observational analysis. Maternal & Child Nutrition, 12(S1), 210–218.
- Dreze, J., & Sen, A. (2013). An Uncertain Glory: India and Its Contradictions. Princeton University Press.
- (Child development & socioeconomic inequality)
- Smith, L. C., & Haddad, L. (2015). Reducing child undernutrition: Past drivers and priorities for the post-MDG era. World Development, 68, 180–204